ॐ पिता श्री 29/8/61

ओम शान्ति। गीत का पहला वरशन्स ही काफी है। यह माँ–बाप जिनको ही त्वमेव माताश्च पिता कहा जाता है। उनको जब याद किया जाता है तब ही पाप की गठरी उतरती है। उनके साथ जब योग हो। बाकी गंगा स्नान वा तीर्थ यात्रा से पाप की गठरी नहीं उतरती। अब हम उनको याद करते हैं तो हमारे पापों की गठरी उतरती है। और कोई उपाय नहीं है। उन द्वारा ही पतित से पावन बनते हैं। हम सब पतित थे। अभी जितना मात–पिता को याद करते रहेंगे उतना पाप का ग्रहण छूटता जावेगा। हम पुण्यात्मा बनते जावेंगे। यहाँ मात–पिता की आशीर्वाद लेनी है। बाकी चरण छूने आदि की बात नहीं है। वो भक्ति मार्ग में करते हैं। पति के पांव धोना, यह करना। यहाँ वो बात नहीं। यहाँ तो सिर्फ याद करना है। तो पाप की गठरी उतरती जावेगी। यह है निशानी गठरी उतर जावेगी फिर हम शरीर छोड़ देंगे। आत्मा पुण्यात्मा बन जावेगी। कहते भी हैं आत्मा ही अपना मित्र और शत्रु है। जितना हम ज्ञान–योग में रहेंगे उतना मित्र बनेंगे। जितना बाबा की सर्विस करेंगे तो बाप की कृपा होगी ऑटोमैटिकली। बाबा है बेहद का मालिक। बाबा के कितने दुकान हैं धंधे के। बाप पूछते हैं ना धंधा जानते हो? धंधा सीखो। अगर धंधा नहीं करते, तो गोया फिमेल हो गई। फिर घर में पेशगीर पहन बैठ जाओ। अब फिर फिमेल्स को ही यह धंधा करना है। बड़े ते बड़े सेठ ने यह सब दुकान खुलवाए हैं। बनारस में भी दुकान खुला है। तो सेठ को ज़रूर दुकान ही याद आते रहेंगे। इस समय दुकान सभी है मम्मा के। तो उनको सारा दिन ख्याल चलता होगा हमारे दुकान कैसे चलते हैं, बच्चे धंधा कैसे करते हैं। बाबा को यही ख्यालात रहती है। बाबा यहाँ बैठेंगे तो भी दुकानों को ही याद करते रहेंगे। इन दुकानों से बच्चे बहुत मालामाल होते हैं। इस दुकान का मैनेजर बहुत अच्छा है। इनका दुकान बहुत अच्छा है। चलता है। बहुत आकर धर्मात्मा बनते हैं। सेठ को दुकान ही याद रहेंगे। बाबा मुरली बजाते रहते हैं तो बुद्धि में यही रहता है। सब बच्चे अपनी मुरली बजाते बजाते रहते हैं तो बुद्धि में यही रहता है सब बच्चे होंगे और मुख खोल ..... होंगे कि बाबा इस समय ज्ञान वर्षा कर रहे होंगे वो मुरली हमारे पास आवेगी। सेन्सीबुल बच्चियाँ मुरली इशारे से ही समझ जावेंगी। फिर इन प्वाइंट्स को ..... कर मुरली चलावेंगे। तो बाबा आकर बच्चों को देखते ....तने अच्छे फूल हैं, कितने सर्विसबुल बच्चे हैं। वो अपन ..... करते हैं और बाप की .... ऑटोमैटिकली

होती है। समझते हैं यह बहुत खुशनसीब है। सर्विस ..... को बहुत खुश करते हैं। मनुष्य को देवता बनाने की सर्विस कोई कम है क्या? परिस्तान का मालिक बनाते हैं। यह है कब्रिस्तान। अब कब्रिस्तान से हमारी दिल नहीं लगेगी। मनुष्य से परी बन जाते हैं। आत्मा प्योर हो उड़ती है। अब परिस्तान स्थापन हो रहा है। कब्रिस्तानियों से हम दिल हटाते जाते हैं। अगर उनसे दिल होगी तो विकर्म विनाश नहीं होंगे। बाबा ज्ञान और योग सिखाते हैं। यह है उनकी ..... कृपा। किसको ....। बहुतों को कृपा मिलती है। हम भारत की सेवा करते हैं तो भारत भी खुशी होगा। सतयुग में भी खुश नसीब ही आवेंगे। जनावर आदि भी सभी सुखदाई होंगे। यथा राजा–रानी, तथा प्रजा। तत्व आदि सब सुख ..... होंगे। एक/दो को सुख देंगे। बाबा सबको बेहद का सुख देते हैं। माया दुःख देती है। हर बात में एक/दो को अशान्त करना माया का काम है। बाबा का काम है एक/दो को शान्त करना। शान्ति की दुनिया है ही सतयुग। दुःखधाम में किसको शान्ति हो नहीं सकती। कोई बोले शान्ति चाहिए। बोलो, आओ तो हम तुमको 21 जन्म लिए शान्ति सुख चाहिए, हैल्थ–वेल्थ सब देवें। सन्यासी ऐसे कह न सकें। हमारी बुद्धि में सारा प्लैन है। यह वर्ण भी भारत के ही हैं। यह तो कोई भी कहेंगे कि अब शूद्र वर्ण है। सभी शूद्र बुद्धि हैं। बाबा ने भी कहा है ना यह सब हैं पत्थर अहिल्या बुद्धि। पारस बुद्धि भी होते हैं सतयुग में। गोल्डन एज्ड बुद्धि, गोल्डन एज्ड दुनिया रहती है। यह सभी वर्ण दुनिया नहीं जानती है। आयरन एज में सभी मनुष्य दुःखी हैं। इसलिए इनको दुःखधाम, हेल, नर्क कहा जाता है। स्वर्ग को गोल्डन एज कहा जाता है। मनुष्य फिर उल्टा समझते हैं कि अभी ही नर्क है, अभी स्वर्ग है। जो मनुष्य सुखी है उनके लिए स्वर्ग है; परन्तु हम समझाते हैं यह कोई स्वर्ग नहीं है। स्वर्ग किसको कहा जाता है चलो दिखावें। प्लैन्स पर बहुत युक्ति से समझाना है। ट्रेविल में तो बहुत सर्विस हो सकती है। ट्रेन में प्लैन्स खोल आपस में ..... ही बैठ जाना चाहिए। मनुष्य देखेंगे ज़रूर पूछेंगे। बोलो, यह है गाइड टू हेविन। भारत कैसे स्वर्ग था फिर नर्क कैसे बना उसका यह प्लैन है। बस, कोई भी आवाज़ सुनेगा तो अपनी सीट छोड़ तुम्हारे पास आ जावेगा। डबल भीड़ हो जावेगी तुम्हारी बात सुनने लिए। वचन ऐसे निकले जो सुनने से मनुष्य चकित हो जाए। भारत ही स्वर्ग था, अब नर्क है। अब दुनिया बदल रही है। खड़े ..... बच्चे सर्विस करने के बहुत तीखे होते हैं। मसानों में भी सर्विस हो सकती है। उन्हों को समझाओ तुम समझते हो फलाना स्वर्गवासी हुआ। आओ तो हम बतावें स्वर्ग–नर्क किसको कहा जाता है। यह बातें सुनने से उनका दुःख उड़ जावेगा। खुश मिज़ाज हो जावेगा। उनका बुद्धियोग दुःखधाम से निकल जावेगा। बाबा कितने तरीके बताते हैं; परन्तु करने वाला चाहिए। धंधे का जिसमें खिर होगा वो बैठा न रहेगा। अंधे को रास्ता बताने की युक्ति रचते रहेंगे। इतना शौक चाहिए। फिर तुमसे पूछेंगे तुम किसके बच्चे हो? बोलो, हमारा लौकिक और पारलौकिक दोनों संबंध हैं। गीता में है ना गृहस्थ व्यवहार में रहते 5 विकारों पर जीत पहन यह अन्तिम जन्म कमल फूल समान बनो। विनाश तो सामने खड़ा है। यह बॉम्ब्स बन रहे हैं। महाभारत लड़ाई जब लगी थी तो यादव–कौरव खलास हुए, बाकी पाण्डवों की जीत हुई थी और गीता से देवी–देवता धर्म की स्थापना हुई। पाण्डवों का राज्य हुआ, जिसको ही राम राज्य कहा जाता है। अब चाहो तो सूर्यवंशी घराने में आओ, चाहे चंद्रवंशी में आओ, चाहे प्रजा बनो, दास–दासी बनो। ऐसा और कोई समझा न सके।

तुम बच्चे ऐसे सर्विस करो तो बहुत खुश होंगे। गठरी में 5 रुपया होंगे वो भी दे देंगे। बोलो, हम लेते नहीं हैं। मांगने से मरना भला। हाँ, बाकी हमने तुमको यह ज्ञान सुनाया इनका विनाश तो होना नहीं है। तुम यह दो मुट्ठी देते हो गोया बीज बोते हो। तुमको ही वैकुण्ठ में महल मिल जावेंगे। यह ..... है। तुम यह बीज बोते हो तो करके ..... लेंगे। हम तो बेहद के बाप के बच्चे हैं। तुम बच्चे ..... बहुत बहुत सर्विस कर सकते हो। ॐ